रात्रि क्लास 20/10/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

रूहानी बाप बच्चों को समझाते हैं अपन को आत्मा समझो और सदैव बाप को याद करते रहो। नये–2 बच्चे नये–2 बातें सुनते हैं। और कहाँ भी ऐसे नहीं कहेंगे। बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। यह नई आदत डालनी है सिर्फ एक जन्म लिए। बाप को याद करो। इनको ही योगअग्नि कहा जाता है। भारत का प्राचीन योग जिससे स्वर्ग की स्थापना हुआ यह किसको भी पता नहीं है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट भी कहते हैं तो उनका ड्युरेशन भी पूरा होना चाहिए ना। शास्त्रों में कितने बड़े2 गपोड़े लगा दिये हैं। लाखों वर्ष आयु कह देते। नई और पुरानी का किसको भी पता नहीं है। बाप ही आकर समझाते हैं। मीठे2 बच्चों यह पुरानी तमोप्रधान दुनिया है। कलियुग है ना। सो भी कलियुग का अन्त है। यह बना बनाया खेल बना हुआ है। इनको रॉंग भी नहीं कहेंगे। ईश्वरीय रचना एक्युरेट है। पुरानी और नई भी है। बाप ने बताया है यह 5000 वर्ष का खेल है। मनुष्य तो घोर अंधियारे में हैं। यह भी शास्त्रों में गायन है कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े थे जबकि बाप आये थे। शास्त्रवादी कितना चमकते हैं। व्यास भगवान था तो एक को माने ना। फिर भगवान ठिक्कर–भित्तर, कण–2 में कह देते। मुँझ हो गई है। बाप आकर बच्चों को समझाते हैं। यह खेल ही 5000 वर्ष का है। तुम बच्चे जानते हो नई दुनिया को सतोप्रधान, पुरानी दुनिया को तमोप्रधान कहा जाता है। यह पुरानी दुनिया है। दुनिया थोड़े ही यह बातें जानती है। जिसको नॉलेज नहीं उनको मूर्ख कहा जाता है। नॉलेजफुल एक फादर ही है। वह समझते हैं भगवान जानी–जाननहार है। सभी के दिलों को जानते हैं। बाप समझाते हैं मैं नॉलेजफुल हूँ। मेरे में सृष्टि का चक्र का नॉलेज है। पतित–पावन भी उस निराकार बाप को ही कहा जाता है। कृष्ण को कब कह नहीं सकते हैं। भक्तिमार्ग में कितना अज्ञान अंधियारा है। बाप बैठ समझाते हैं ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्मा और विष्णु का कनेक्शन क्या है वह भी समझाया है। चित्र भी दिखाते हैं विष्णु के नाभी कमल से ब्रह्मा निकला। उनको शास्त्र भी दिखाते हैं। सूक्ष्मवतन में तो शास्त्र आदि होते ही नहीं। यह सिर्फ सा0 का ड्रामा में पार्ट है। यह बातें अभी तुम बच्चे जानते हो। ऊपर में ब्रह्माण्ड हम आत्माएँ जहाँ रहती हैं। वह समझते हैं अण्डे मिसल आत्मा है। इतनी बड़ी तो हो न सके। बाबा है परमपिता परम–आत्मा। सिर्फ वह है सुप्रीम। बाकी आत्मा में कोई फर्क नहीं है। वह एवर प्योर रहते हैं परमधाम में। परमपिता परमात्मा को ही सभी याद करते हैं। बाप आकर पतितों को पावन बनाते हैं। इस सारे झाड़ की नालेज भी बाप ही दे सकते हैं। यह कोई भी नहीं जानते। सन्यासी आदि सभी नेती2 कहते रहते। रचयिता और रचना को नहीं जानते। अच्छा, ल0ना0 को रचयिता और रचना का ज्ञान है? कब यह ख्याल किया है। ल0ना0 जो स्वर्ग के मालिक हो कर गये हैं, उनसे कब पूछा है। इनसे कोई पूछे तो यह भी कहेंगे नेती2। ड्रामा अनुसार जब बाप आये तब ज्ञान दे; क्योंकि ज्ञान से होती है सद्गति तो बाप संगम पर ही आकर सर्व की सद्गति करते हैं। यह है पढ़ाई। इसमें नम्बरवार पढ़ने वाले हैं। यह है बेहद की पढ़ाई। जिससे गति–सद्गति, मुक्ति–जीवनमुक्ति होगी। बाकी लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। तुम कितना समझाते हो। प्रजा बनती जाती है। बाकी गायन है कोटों में कोई मुझे जानते हैं। 400 करोड़ की कोट है सभी तो नहीं जानते हैं। सतयुग आदि में हैं देवताएँ बाकी सभी कहाँ गये यह ख्याल में नहीं है। किनकी बुद्धि में है 40 हजार वर्ष बाद बाप आवेंगे। अभी तुम समझते हो। अभी तुम श्रीमत पर योगबल से अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। सतयुग में इन्हों का राज्य था। अभी इन्होंने किससे जीता? दिखाते हैं असुरों और देवताओं की लड़ाई लगी; परन्तु लड़ाई की तो बात ही नहीं। पत्थर बुद्धि हैं ना। इसलिए मैं आकर समझाता हूँ। कहाँ वह स्वर्ग की खुशी, कहाँ यह नर्क का दुख। सतयुग को कहा जाता है सुखधाम। तुम समझते हो 5000 वर्ष पहले हम सुखधाम में थे। कितना रात–दिन का फर्क है। ऐसे नहीं कहना है हम शास्त्रों को नहीं मानते हैं। बोलो, हम तो 63 जन्म शास्त्र पढ़े हैं। तुमको थोड़े ही पता है शास्त्र कबसे शुरू हुई है। पहले नम्बर का गीता है माई–बाप। बाकी है उनकी रचना। बाल बच्चे। अभी तुम्हारी युद्ध है 5 विकारों रूपी रावण से। तुमको अहिंसक देवी

देवता धर्म वाला बनना है। तुम डबल अहिंसक बनते हो। कड़ी से कड़ी हिंसा है विकार की। गांधी भी गाते थे पतित–पावन.....सभी भक्त हैं भगवान एक है। जो सभी को श्रृंगारने आते हैं। बाप बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। ऐसे नहीं हमारे अन्दर की वह जानते हैं। वही सुख–दुख देते हैं। उनको कहा जाता है मूर्ख। सन्यासियों ने गीता में कितनी एडल्ट्रेशन कर दी है। पहले2 प्वाइंट सर्वव्यापी की है। कितना घाटा डाल दिया है। यह भी ड्रामा में नूँध है। फिर भी होगा। आधा कल्प भक्ति जिन्दाबाद फिर आधा कल्प ज्ञान जिन्दाबाद। शिवरात्रि कहते हैं; परन्तु अर्थ नहीं जानते हैं। ऊँच ते ऊँच फिर नीच ते नीच। फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं। मैं आता ही उस तन में हूँ जो पूरे 84 जन्म लेते हैं। अभी तुम फरिश्ता बन रहे हो। पिछाड़ी में सभी की रिजल्ट का सा0 होगा। ट्रान्सफर होने पहले तुमको मालूम होगा। फिर नई राजधानी में चले जावेंगे। कितना ट्रान्सफर होते हैं। यह बाप की एक ही पढ़ाई है सतयुगी देवी देवता धर्म की स्थापना करने की। इन्हों की राजधानी थी ना। रामचन्द्र की भी राजधानी थी। तुम जानते हो संगम पर राजधानी स्थापन होती है। तुम सभी हो एडॉप्टेड बच्चे। ब्राह्मणों द्वारा ही बाप स्थापना करते हैं। ब्राह्मण है चोटी। विराट रूप का चित्र है; परन्तु वह रांग बना हुआ है। शिव का भी चित्र है नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा का भी नहीं है। इस समय तुम हो ब्राह्मण सम्प्रदाय। वह है दैवी सम्प्रदाय। तुम्हारा सरनेम है ब्राह्मण। फिर देवता बनते हो। बाप आकर यह नालेज देते हैं जिससे तुम यह बनते हो। तुम अभी जानते हो। अब वापस घर जाना है। पुरानी दुनिया को भूलने में टाइम लगता है। इतनी छोटी सी अविनाशी आत्मा में अविनाशी रिगार्ड(रिकार्ड) भरा हुआ है। एक भी पार्ट से निकल नहीं सकता। एक्युरेट टाइम पर जब बाप को आना होता है आकर समझाते हैं। सिर्फ बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। माया जीत, जगत जीत बन जावेंगे। सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। आधा कल्प रावण का राज्य है यह कोई को पता नहीं है। यह है नम्बरवन दुश्मन। हर वर्ष जलाते हैं; परन्तु समझ कुछ भी नहीं है। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।